Impact Factor (SJIF): 6.092 E-ISSN: 2583-1615

International Journal of Research in Academic World

Received: 05/June/2023 IJRAW: 2023; 2(7):139-142 Accepted: 11/July/2023

आधुनिकता और राज्य की बदलती भूमिका

*[1]Teeka Ram

*[1]Ph.D. Scholar, Department of Political Science, Babasaheb Bhimrao Ambedkar University, Vidya Vihar, Luchnow, Uttar Pradesh, India.

सारांश

प्रारम्भिक काल में वे मार्क्स से अत्यधिक प्रभावित थे। मुख्य रूप से मार्क्स के अर्थशास्त्र में उनकी अत्यधिक रुचि थी। मार्क्स जीवन पर्यन्त उत्पादन सम्बन्धों की चर्चा करते रहे। उनके सिद्धान्त का आधार ही उत्पादन सम्बन्ध थे। आज भी जो रूढ़िवादी मार्क्सवादी हैं, वे उत्पादन सम्बन्धों के इर्द–गिर्द ही अपना विश्लेषण करते हैं। इन उतपादन सम्बन्धों से प्रेरित होकर बोड्रिलार्ड ने मार्क्स में सुधार किया। मार्क्स ने उत्पादन सम्बधों पर अपने आपकों इतनी अधिक केन्द्रित कर दिया कि उन्होंने उपयोग की कोई चर्चा ही नहीं की। उपभोक्तावाद इस तरह उनकी पकड़ से छूट गया। इसी को बोड्रिलार्ड ने पकड़ लिया। यही इनकी केन्द्रीयता रही है। दूसरा बोड्रिलार्ड ने मार्क्स के एक और अछूते पहलू को अपनी विषयवस्तु बनाया। उन्होंने संस्कृति के विश्लेषण में आर्थिक और भौतिक प्रक्रियाओं पर अधिक जोर दिया। बोड्रिलार्ड के अकादमिक जीवन पर एक और प्रभाव संरचनावादियों का था। संरचनावादियों में भी भाषाविद् वैज्ञानिकों का प्रभाव बहुत ज्यादा था। इन भाषाविदों में फर्डिनेन्ड सोसोरे प्रमुख हैं। मार्क्स और सोसोरे के अतिरिक्त बोड्रिलार्ड पर दरखाईम का प्रभाव भी देखने को मिलता है। दरखाईम ने आदिवासियों के उपहार के विनिमय की जो परम्परा है, उसका विस्तृत अध्ययन किया है। आदिवासी जन्म और विवाह के अवसर पर उपहार या भेदस्वरूप वस्तुओं का विनिमय करते हैं। यह एक प्रक्रिया है जिसका अर्थ वस्तुओं को लेना और लौटाना, वस्तुओं को देना और प्राप्त करना होता है। दरखाईम की इस अवधारणा का प्रयोग बोड्रिलार्ड ने प्रतीकों के रूप में रखा है। यदि दरखाईम का विनिमय आर्थिक विनिमय है तो बोड्रिलार्ड का प्रतीकात्मक। यहाँ दरखाईम का प्रथाव बहुत स्पष्ट रूप में देखने को मिलता है।

मूल शब्दः पूंजीवाद, उद्योगवाद, प्रशासनिक शक्ति (निगरानी), राष्ट्रराज्य, प्रतिबिम्ब समाज

प्रस्तावना

आधुनिकता क्या है?

अगर हम आम आदमी के नजरिये से आधुनिकता को समझने की कोशिश करें तो लगता है। कि तो अपने मनमाने ढंग से इसे समझाने की और इसे बताने की कोशिश कर रहे है। आम बोलचाल के आधुनिकता की भले ही कोई स्पष्ट अवधारणा न हो लेकिन एक विषय वस्तु के रूप में आधुनिकता की धारणा विभिन्न विषयों में लगातार देखने को मिलती रही चाहे वो साहित्य का विषय हो या सामाजिक विषय हो और या फिर समाज शासत्र का विषय हो पर वही समाज शास्त्र में तो इसका विकास सबसे पुराना दिखाई देता है। और इसे यहा जरूरत है। कि एक परम्परा से आधुनिकता और उत्तर बहुलवाद से उत्तर आधुनिकता की समझ विकसित करने के लिए बहु–विषय दृष्टी कोणों को अपनाने की कोशिश करेगें अगर एक ऐतिहासिक रूप से आधुनिकता को समझने की कोशिश करे तो हमे इसका आरंम्भ 18वीं शताब्दी में तेजी से दिखाई देने लगता है। जबकि इसकी जड़े काफी पुरानी है। क्योंकि यूरोप के औद्योगिकरण से पहले ही ज्ञानोदय आ गया था और इसमें विज्ञान के क्षेत्र में काफी क्रान्तिकारी परिवर्तन ला दिया था। और इसकी ही पृष्ठिभूमि में उदारवादी विचार को बढ़ावा मिला ओर अब लोग इसकी वजह से धर्म को एक सदेंह की दृष्टि से देखने लगे और हाब्स, लॉक, रूसो जैसे विचारको ने तो नये सीरे से राजनीति और सामाजिक व्यवस्था की व्याख्या कर दी। ओर ये ऐसी व्याख्या थी। जिसमें मनुष्य और उसकी प्रकृति को वैज्ञानिक ढंग से बताने की कोशिश की गई। और इसी 18वी सदी की वैज्ञानिक क्रान्ति को आधुनिकता का जनक माना जाता है।

औधोनिकरण के परिणाम स्वरूप जहाँ एक और यूरोम में सामंतवाद का पतन हुआ वही दूसरी और पूंजीवाद का विकास आरंभ हुआ और उद्योगों के कारण शहरीकरण तेजी से बढ़ गया और 20वीं शताब्दी आते–आते आधुनिकता का प्रभाव काफी बढ़ गया। और इस आधुनिकता की प्रक्रिया को गति देने के लिए कई कारको ने काम किया जिसमें से सबसे प्रमुख कारको में मुनाफे की विचारधारा उदारवाद के विजय का विचार और पूंजीवाद के विरोध में समाजवाद का उद्भव महत्वपूर्ण रहे। और साथ–साथ कुछ ऐसी राजनीतिक क्रान्तियाँ भी रही जिन्होने कई राजनीतिक मुख्य प्रदान करें।

जैसे–जैसे सामंतवाद मे गिरावट होने लगी और पूंजीवाद का विचार तेजी से महत्वपूर्ण होने लगा। और इसी पूंजवाद ने मुनाफे विचारधा को महत्वपूर्ण बना दिया और यही कारण था कि उपनिवेशवाद को गति मिलि और जिसके नतीजे में सामराज्यवाद पनपा और इसे औद्योगिकरण ने तेज गति प्रदान करी और जिसके परिणाम स्वरूप हम कह सकते है कि दुनिया दो हिस्सों में बट गई। (1) वो हिस्सा जिसने इन सभी प्रक्रियाओं को नियंत्रित करके

*Corresponding Author: Teeka Ram

अपना प्रभुतव स्थापित करा और दूसरे वो हिस्सा जिसका इस प्रक्रियाओं के कारण शाषण आरंभ हुआ पर यहाँ नोट करने वाली सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि इन सब प्रक्रियाओं के बीच एक ऐसा राजनीतिक विचार पनपा जिसने काफी हद तक हमारी राजीनतिक दुनिया को बदल दिया और ये विचार था। राष्ट्रवाद और इस विचार को हम ओग के अध्यायों के विस्तार से समझेगें।

उदारवाद का विचार जिसकी जड़े ज्ञानोदय में है। ओर जिसके केन्द्र में लोकतान्त्रिक व्यवस्था है। और जो राजशाही ओर सामंतवाद का विराध करता है। और इसी उदारवादी विचारधारा ने आधुनिकता का और ज्यादा स्तिार कर दिया पर एक दौर ऐसा भी आया जब विचारधारा का अंत जैसी धारणा विकसित होने लगी और इस समय ये माना जाने लगा की विचारों में बहुलता आ गई है। और इस बहुलता की प्रकृति कही न कही उदारवादी किस्म की थी। और इसी सदंर्भ में फ्रांसीस कुकुयाना और हग्टींठटन के मत काफी महत्वपूर्ण रहे (इनके विचारों की चर्चा पहले ही कि जा चुकी है।) आधुनिकता की प्रक्रियाओं को समझने के बाद उसके अीि और उससे जुड़ी परिभाषाओं को भी समझना आवष्यक है। और इसको समझने के लिए हम कुछ विचारकों का सहारा ले सकते है। क्योंकि आधुनिकता के सदंर्भ में ये विचारक और इनके विचार काफी महत्वपूर्ण है।

आधुनिकता एक तरह का जगनोर हैः एन्थनी गिडिन्स (Modernity is a Juggernaut: Anthony Giddens)

एक ब्रिटिश समाज शास्त्री के रूप में गिडेन्स ने संरचनाकरण के सिद्धान्त को आगे बढ़ाये थे संरचना को दुर्खाइम कि तरह केवल एक बाहरी दबाव के रूप में नही देखते बल्कि इसे एक प्रक्रिया के रूप में देखते है। और इसी को आधार बनाकर उन्होंने आधुनिक समाज की व्याख्या करी है। और आधुनिक सामज को एक जर्गन नोट की तरह परिभाषित करते है। ''आधुनिकता एक ऐसे भगोड़े लेकिन बहुत शक्तिशाली भारी भरकम इंजन की तरह है जिसे हम एक सीमा तक तो चला सकते है। लेकिन हमें यह बेलगाम होकर भागने की धमकी भी बराबर देता रहता है। इस दौड़ में यह भी सम्भव है कि यह अपने आपको भी तोड़–फोड़ दे। यह जगर्नाट उन सबको मरयिामेट कर देता है जो इसका विरोध करते है। काफी तो लगता है कि आधुनिकता का जगर्नाट का बड़ा जमकर और संयत गति से चल रहा है। काफी ऐसी अवसर भी आता है जबकि हम इसकी दिशा को यही समझ सकते। यह नहीं कि आधुनिकता के इस इंजन की सवारी हमेशा कष्ट दायक होती है। या हानिकारक होती है। इसमें बैठने में बड़ा मजा आता है। और कभी–कभी लगता है कि इसका अगला पड़ाव बड़ा रूचिकर होगा यह होते हुए भी निश्चित रूप से आधुनिकता को कभी भी अपने नियंत्रण में रखना संभव नहीं है और न की इसकी मंजिल को तय करना।''

गिडेन्स की परिभाषा एक कविता की तरह जरूर लगती है। पर इसमें इन्होने आधुनिकता की धारणा को बाधने की कोशिश की है। गिडेन्स कहते हैं, कि आधुनिकता धारणा है, जिसमें परिवर्तन ओर गतिशीलता जुड़ी हुई है। और सबसे महत्वपूर्ण बात यह है, कि गिडेन्स उन प्रमुख विचारको में से है। जिन्होने आधुनिकता को ना तो उदारवाद से जोड़ा है और न ही पूंजीवाद से जोड़ा है। यहाँ गिडेन्स आधुनिकता को समझाने के लिए चार संस्थाओं के सदंर्भ देते है। जिसमें पहली संस्था पूंजीवाद है। जिसके अन्दर काल का उत्पादन नीजीकरण महत्वपूर्ण है। दूसरी संस्था उद्योगवाद हैं जिसके अन्दर सूचना ओर संचार महत्वपूर्ण होता है। तीसरी संस्था राज्य द्वारा निगरानी की संस्था इसके अन्दर राज्य की शक्ति शामिल होती है। और चौथी संस्था राष्ट्र राज्य होते है। और इन सबका सबंधं ही आधुनिकता है। और फिर गिडेन्स अपनी आधुनिकता के विचार को अपनी पुस्तक The Consequences of Modernity, 1990 में आगे बढ़ाते है। जहाँ यह आधुनिकता को समाज से जोड़ते हुए प्रतिबिम्ब (Reflex) समाज कहते है। जिसमें समय व स्थान (time and space) सुकुड गया है। और इस प्रतिबिम्ब का प्रभाव दुनिया में हर क्षेत्र में और हर समाज में देखने को मिलता है। आधुनिकता को समझने के लिए गिडेन्स ने प्रतिबिम्ब के साथ–साथ उसन्निहितता (Disembodiment) का उपयोग करते हैं इसमें परम्परागत समाज के लोग परम्परागत समुदास से जुड़े हुए होते थे वो अब समाज से हटकर जीवन बिताते है। इस प्रकार गिडेन्स ने आधुनिकता की छः मुख्य विशेषता बताई है।

1. पूंजीवाद
2. उद्योगवाद
3. प्रशासनिक शक्ति (निगरानी)
4. राष्ट्रराज्य
5. प्रतिबिम्ब समाज
6. असन्निहितता

गिडेन्स के अनुसर आधुनिकता को समझने के पश्चात परम्परागत सामाजिक सिद्धांतकारों द्वारा इसे समझना कुी आवश्यकता है। जिसमें प्रमुख है। दुर्खाइम, मेक्सवेबर और काल मार्क्स दुर्खाइम ने आधुनिकता को आगिक ;वतहंदपबद्ध के सदंर्भ में देखा है। इनका कहना है कि यांत्रिक सामज (Mechanical society) धीरे–धीरे बदलकर आंगिक (organic socity) हो जाती है। और फिर धीरे–धीरे यांत्रिक समाज की सामूहिक चेतना संविध का रूप ले लेती है। ओर जिससे एक आधुनिकता का ढाँचा उभरकर आता है। ओर जिसकी प्रकृति में अधिक से अधिक स्तरीकरण ओर विशेषज्ञयता होती है। और सिजमें एक बाजार भी विकसित होता है। और दुखाईम कहते हैं कि यांत्रिक समाज में इसके विपरित स्तरिकरण काफी कम होता है। इस प्रकार हम कह सकते है कि दुखाईम के अनुसार आधुनिकता वो है। जिसमें अधिकतम स्तरीकरण हो।

वही दुर्खाइम के विपरित कार्ल मार्क्स पूंजीवादी अर्थव्यवस्था के संबंध में करते है। मार्क्स का मानना है। कि पूंजीवाद में पुरानी व्यवस्था का खत्म करके एक शोषण कारी आर्थिक व्यवस्था को जन्म दिया ही जहाँ उत्पादन के साधनों उत्पादन की शक्तियां ओर उत्पादन के संबंधो पर बुर्जुआ वर्ग का नियंत्रण है। और वही फिर मार्क्स ने ऐतिहासिक भौतिकवाद की अवधारणा का उपयोग करके बताते है कि इस शोषणकारी अर्थव्यवस्था में मजदूरों को अलगाव का सामना करना पड़ता है। और हर क्षेत्र का और उसकी हर प्रकृति का वस्तुकरण हो जाता है। इस प्रकार मार्क्स का सिद्धान्त ये बताता है कि आधुनिकता एक वस्तुकरण की प्रक्रिया है जिसमे अधिक से अधिक उतपादन करना होता है। वही मेक्सवेबर आधुनिकता को दुर्खाइम और कार्ल मार्क्स से हटकर इसकी व्याख्या तार्किकता की दृष्टि से करते हैं जहाँ ये माना जाता है। की आधुनिकता के आने से पहले लोग एक तरीके के लोहे के पिजड़े में बंद थे। अेर वो सम्पूर्ण सामज को ईश्वर के भरोसे छोड़कर चलते थे। और मानते थे कि जो भी चीज हो रही है। उसके लिए ईश्वर जिम्मेदार हैं और इस ईश्वर के विश्वास से आधुनिकता ने मनुष्य को बाहर लाकर खड़ा कर दिया। यहाँ नोट करने वाली बात यह है, कि मेक्स वेबर न तो धर्म को समझना चाहते थे न ही राजनीति को वो ये समझना चाहते थो कि कैसे धर्म के मुख्य पूंजीवाद से जुड़े हुए है। फिर भी हम ये कह सकते है कि मेक्स वेबर ने आधुनिकता को तार्किकता के साथ जोड़ा।

परम्परागत सामाजिक सिद्धान्तकारी को समझने के बाद आवश्यकता है। कि हम आधुनिकता के आधुनिक सामाजिक सिद्धान्तकारों के कुछ प्रमुख विचार भी समझे 1960 के दशकों में अर्तराष्ट्रीय स्तर पर काफी महत्वपूर्ण बदलाव हुए क्योंकि इस समय दा शक्तिशाली देशों के बीच शीत युद्ध चरम पर था। ओर कही न कही मार्क्सवादी विकास योजना तेजी से बढ़ रही थी। और इसी वजह से अमेरिका में विशेषज्ञों का एक ऐसा काल उभरा जिसने मार्क्सवादी विकास योजनाओं का विकल्प देने की कोशिश करी और इस दल ने ये कोशिश करी की आधुनिकता को दूसरे देशों में फैलाया जाए और सैद्धान्तिक स्तर पर इस काम को टेलकोट पार्सन्स ने किया इनके अनुसार आधुनिकता तो एक मुख्यों की गठरी है। और इस सदंर्भ मं समाज में जितना अधिक सरंचनात्मक

विभेदीकरण होगा समाज उतना ही अधिक आधुनिक होगा। और इसको समझाने के लिए पार्सन्स ने च्जजमतद टंतपंइसम का एक आदर्श प्रारूप रखा उनका कहना है कि किसी भी व्यवहार को करने से पहले हमेशा एक असमंजस की स्थिति होती है। और इसी वजह से व्यक्ति अपने मूल्यों के अभिविन्यास के अनुसार विर्णय करता है। कि उसे कौर सी क्रिया करनी चाहिए अथवा कौन सी क्रिया नहीं करनी चाहिए। ये Pattern Variable ही समाज को परम्परागत से आधुनिक बनाते है। इस प्रकारपार्सन्स मूल्यों के आधार पर आधुनिकता को परिभाषित करते है। जिसमें प्रमुख मुख्य है। भावनात्मक तथ्स्ता, विशिष्टता, सर्वव्यापकता, उपलब्धि अैर सामूहिकता वही उल्रीबैक (Ulrich Beck) जैसे विचारक आधुनिकता को बताने के लिए एक अलग संदर्भ का नेम करते है। वो कहते है, आधुनिकता की संस्कृति खतरे की संस्कृति है। कुछ ऐसी ही बात गिडेन्स ने भी की थी। इस संस्कृति के विशेषज्ञ समाज को कुछ इस प्रकार बनाते है। कि मनुष्य के लिए हमेशा खतरा बना रहे। उल्रीचबैक कहते है कि परम्परागत युग में जो आधुनिकता थी वो औद्योगिक थी आज जो आधुनिकता है वो 19वीं शताब्दी की आधुनिकता से भिन्न है। इस आधुनिकता में व्यक्ति करण बहुत अधिक है। ये व्यक्ति ऐसा है जिस पर कोई लगाम नहीं है। किसी का दबाव नहीं है इन व्यक्तियों के क्रियाकलाप न ता उनके वर्ग से प्रभावित है न हि जाति विरादरी से प्रभावित है। ऐसे व्यक्तियों से समाज को जो बहुत बड़ा खतरा है। वो उनके संचित धन से है। जिन कारखानों और उद्योगों को ये व्यक्ति चलाते है। उनका समाज के स्वास्थ्य पर क्या असर पड़ता है इससे उन्हे कोई मतलब नहीं है वो आये दिन एक ऐसे खतरे के समाज का निर्माण कर रहे है। जो आने वाली पीढ़ियों को भी निगल जायेगा उल्रीचबैक का बहुत बड़ा थीसीस ये है, कि आज जिस आधुनिकता में हम जी रहे है। वो और कुछ न होकर प्रकृति का राजनीतिकरण है। कारखाने और प्रदूषण का जो भद्दा चेहरा हमारे सामने है। वो किसी भी जानलेवा खतरे से कम नहीं है इस अर्थ मं आधुनिकता केवल मात्र खतरे की घंटी है। जार्ज रिस्जर ने आधुनिकता की व्याख्या मेक्सवेबर की तार्किकता की अवधारणा से ली है। वेबर ने इस तार्किकता की अवधारणा को धर्म ओर प्रभुत्व के अध्ययन के लिए विकसित करा ये आधुनिकता को अनिवार्य रूप से तार्किक मानते है। और इस तार्किकता को उन्होंने संरचनात्मक स्तर पर रखा है। नौकरशाही एक संरचना है, जिसमें वो तार्किकता की खोज करते है। और इसी तरह धर्म की संरचना में उन्हें तार्किकता दिखती है। इस प्रकार वेबर के अनुसार तार्किकता बहुत प्रकार से सरंचनात्मक होती है। इसी अवधारणा को रिजल्ट आगे बढ़ाते है वो कहते है कि तार्किकता कई स्वरूपों में मिलती है। वेबर की आधुनिकता इस आधुनिकता दुनिया में और अधिक बढ़ गई है। जिसे हम फास्ट फूड रेस्टोरेन्ट और क्रेडिटकार्ड की व्यवस्था में देख सकते है। और रिटजर अपनी अवधारणा को और अधिक स्पष्ट करने के लिए मक्डोनल रेस्टोरेन्ट का उदाहरण देते है। ये रेस्टोरेन्ट तार्किकता की अवधारणापर संचालित होता है। और इसके पीछे एक ठोस आर्थिक तर्क है। ये रेस्टोरेन्ट में खाने–पीने की सुविधा तो देता ही है। और आधुनिकता का एक बेहतर उदाहरण भी है। क्रेडिटकार्ड अेर अमेरिकीकरण भी इसी तार्किकता की अवधारणा के अर्न्तगत आ जाता है। कुल मिलाकर रिटजर की दृष्टि मे आधुनिकता विकसित विवेक है। झिगमून्ट बॉमैन ने आधुनिकता का विध्वंस पेराडाइम मॉडल (Holocoust Paradigm of Modernity) दिया है वो कहते है कि नाजियों ने दूसरे विश्व युद्ध में हजारों यहुदियों को जर्मनी के गेस चेम्बर में हमेशा के लिए सुला दिया ये एक नौकरशाही का तर्क था। और उनकी तार्किकता थी। इसीलिए कभी–कभी सरंचनात्मक औपचारिक तार्किकता समाज को विध्वंस के कगार पर पहुंचा देती है। पद्धति ये पैराडाइम नियमित नहीं है, कभी कभार ही देखने को मिलता है। फिर भी इस बात को नहीं नकारा जा सकता की आधुनिकता अपने आपमें विध्वंसक भी है। कहा जा सकता है कि आधुनिकता का विध्वंस से क्या नाता हो सकता है। लेकिन 11 सितम्बर 2001 को अमेरिका के न्यूयॉर्क और वाशिंगटन पर जो आतंकवादी आक्रमण हुआ क्या एसमें कोई तर्क या तार्किकता नहीं थी। ये निश्चित है, कि विध्वंसात्मक गतिविधियों में भी उतने ही तर्क ओर तार्किकता की आवष्यकता होती है। जितनी की निर्माण कार्यो में होती है। जब नाजियों ने यहुदियों को गेस चेम्बर पर रखा था तब उनका बहुत बड़ा स्पष्ट तर्क था "कि किसी तरह यहुदियों से छुटकारा पाना है। और इसी प्रकार की तार्किकता ने विध्वंस के लिए प्रेरित किया बामैन इस बात से सेहमत नहीं है कि नौकरशाही तटस्थ होती है। जिसे जिधर चाहों चला दो सरकार ये नहीं देखती की गोली चलाने पर जन हानि हो जाती है। वो तो अपने राजनीतिक उद्देश्यों की प्रर्ति करना चाहती है। और इसीलिए अन्त में बॉमैन कहते हैं की विध्वंस के पीछे भी एक ठोस तार्किकता मिलती है। आधुनिकता की व्याख्या का ये विवेचन बड़ा रोचक है। मेक्सवेबर ने इसकी परिभाषा को बुद्धि संगत या विवेक के साथ जोड़ा था तो दुखाइम ने इसे स्तरीकरण से बांधा और मार्क्स ने इसका संबंध वस्तुकरण के साथ स्थापित किया। फिर इसके बाद आधुनिकता प्रजातंत्र पूंजीवाद उद्यौगिकरण के साथ जुड़ी। जब तो इसकी व्याख्या फास्अ फुड रेस्टोरेन्ट, करेडिट कार्ड ओर विध्वंस के संदर्भ में कि जाने लगी है। व्याख्या कहा से चलकर कहा पहुच गई है। आधुनिकता पर इन प्रमुख विचारकों के विचारों के अलावा जर्गन हेबरमास का भी विचार है। जिन्होने आधुनिकता को एक अधूरे प्रोजेक्ट की तरह देखते है। हेबरमास कहते हैं कि आधुनिकता एक अधूरो प्रोजेक्ट है। (Modernity is an unfinished Project) जर्मनी के जर्गन हेबरमास का संबंध फ्रेकफर्ट स्कुल की विचारधारा से हैं इस विचारधारा के लेखक मार्क्स के सिद्धान्त से प्रभावित थे। और इनका तर्क मार्क्स के सिद्धान्तों में संशोधन करना भी था इनका कहना था कि मार्क्स ने अपने आपको आर्थिक कारको के साथ इतना जोड़ जदया है। कि उन्होंने सांस्कृतिक कारको को छोड़ दिया। ओर इसीलिए फ्रेकफर्ट स्कूल वाले विचारक सांस्कृतिक कारको पर भी अधिक बल देते है। ये बड़ी दिलचस्प बात है, कि हेबरमास मार्क्सवादी होते हुए भी पूंजीवाद के समर्थक थे। उनका मानना था कि आज की दूनिया में पूंजीवाद का कोई विकल्प नहीं है। मतलब हुआ आधुनिकता का कोई विकल्प नहीं है। हेबरमास ने मार्क्स के विचारों में थोड़ा सा संशोधन करके सार्वजनिक क्षेत्र (Public Sphere) की अवधारणा को रखा जदेखा जाये तो सार्वजनिक क्षेत्र की अवधारणा बुनियाद रूप से प्रजातंत्र की अवधारणा का ही एक अंग है। हेबरमास का मानना है कि रूठीवादी प्रजातांत्रिक प्रकृति आज के आधुनिक सामज में कामयाब और कारगर नहीं हो सकती अब हमे छोटे–छोटे फैसले प्रजातांत्रिक संगठनो के अतिरिक्त सार्वजनिक क्षेत्रों के माध्यमों से भी करने होगे हमे इन सार्वजनिक क्षेत्रों को सुधारना होगा स्थानिय स्तर से लेकर राष्ट्रीय स्तर एक सार्वजनिक क्षेत्रों में सुधार लाना पड़ेगा। हेबरमास का तर्क है कि आज के आधुनिक समाज में संचार के अनेको साधन है। पर इन साधनों पर वाणिज्य का बहुत बड़ा प्रभाव है। टेलीवीजन और समाचार पत्रों का विश्लेषण करें तो एक दम स्पष्ट हो जयेगा की ये सब साधन उद्योग के विज्ञापनो से भरपूर है। ऐसी अवस्था में अभी आधुनिकता सामज में लाने के लिए हमें बहुत कुछ करना होगा। आज का समय उत्तर–आधुनिकता लाने का नहीं है, आज तो समय इस बात के लिए है। की हम अधूरी आधुनिकता को पूरा करे हेबरमास लिखते है, कि "आधुनिकता एक अधूरा प्रोजेक्ट है, इसका अर्िा है, इसे लोने के लिए अभी हमे दुनिया में बहुत कुछ करना पड़ेगा। हम उत्तर–आधुनिक समाज के बारे में सोचने से पहले इस प्रोजेक्ट को पूरा कर ले तो ये बहुत बड़ी बात होगी। हेबरमास के अनुसार आधुनिक समाज में संशोधित प्रजातंत्र के अतिरिक्त सार्वजनिक क्षेत्र का भी प्रयाप्त विकास होना चाहिए प्रजातंत्र पूंजीवाद और सार्वजनिक क्षेत्र के अतिरिक्त हेबरमास एक और तत्व पर जोर देते हैं। ओर वो है, तार्किकता हेबरमास कहते हैं, कि आज दुनिया का बहुत बड़ा भाग लाचारी ओर आभाव में जी रहा है और ऐसे समाज में कोई तार्किकता बेइमानी है। इसे दूर करने के लिए आर्थिक और प्रशानिक ढांचे को नष्ट करने से कुछ नहीं होगा। आवश्यकता इस बात की है, कि हम इन वंचित लोगो

को वो साधन उपलब्ध करये जो इनके जीने के लिए आवश्यकता है और इस उपलब्धि के बाद ही तार्किकता किसी काम की होगी।

निष्कर्ष

ध्फूफूयामा ने 1989 में एक सनसीखेज प्रबन्ध रखा। इसमें उन्होंने स्थापित किया कि अब इतिहास का अंत हो गया है। इसका मतलब यह है कि अब हमेशा के लिये समाजवादी समाज के आने की कोई सम्भावना नहीं रही। अब राज्यहीन वर्गहीी समाज की कल्पना एक खालिस कल्मना मात्र रह गई। यह सब होते हुए भी जेमेसन ऐसे मार्क्सवादी उत्तर–आधुनिकतावादी लेखक है। जो पूंजीवाद की व्याख्या नये तरीके से करते हैं। लगभग महान वृतान्तों का विरोध करते हैं। वे तो उत्तर–आधुनिकता की व्याख्या ही महान वृतान्तों के निषेद में करते हैं। ऐसी बौद्धिक पृष्ठभूमि में जेमेसन ही एक ऐसे विचारक हैं जो मार्क्स के माहन वृतान्त को स्वीकार करते है।

पूंजीवाद का जो यह नया स्परूप उभर कर आ रहा है उसे जेमेसन विलम्बित पूंजीवाद कहते हैं। मार्क्स ने तो संस्कृति को अधिसंरचना करार करके हाशिये पर डाल दिया था। लेकिन पूंजीवाद का जो नया अवतार हमारे सामने है वह संस्कृति को ही अविा सुविधाजनक पायदान बनाकर अपने अपको अधिक समृद्ध कर रहा है।

उनका तर्क है कि आज की अर्थ व्यवस्था में पूंजीवाद ने संस्कृति को ही एक पण्ड वस्तु अन्य वस्तुओं की तरह संस्कृति का भी उत्पादन होने लगा है। संस्कृति बेची जाती है। इस भांति संस्कृति का आधुनिक अर्थव्यवस्था में एकीकरण हो गया है। तीसरा योगदान भी बड़ा महत्वपूर्ण है, वे कहते हैं कि आज की उत्तर–आधुनिकता में सामाजिक बहुलकवाद है। भांति–भांति के लोग है। कई संस्कृतिक है। इसमें वर्ग व्यवस्था नहीं रही। वर्गों का स्थान तो विभिन्न स्थानिक समूहों ने लेलिया है। अब राजनीतिक समूह हैं, क्षेत्रीय समूह हैं, कला प्रेमियों के समूह हैं, चित्रकारों के समूह है। वर्ग नहीं हैं। वर्गों की अनुपस्थिति ने बड़ी संघर्ष के स्थान पर नये आन्दोलन खड़े कर दिये हैं। जेमेसन के इस तरह के सोच ने मार्क्सवादी विचारधारा को नये सिरे से सोचने का अवसर दिया है। जेमेसन ने ल्योटार्ड, बोड्रलार्ड जैसे उत्तर–आधुनिक विचारकों का विरोध किया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. एलथ्यूज़र, एल, 1971, "आइडियोलॉजी एंड आइडियोलॉजिकल स्टेट एपेरेट्स" ;प्कमवसवहल वि प्कमवसवहपबंस ैजंजम ।चचंतंजनेद्ध इन एल, एलथ्यूसर (ई.डी), लेनिन एंड फिलोसॉफी एंड अदर एसेस (Lenin and Philosophy and Other Essays)] एन एल बी, लंदन।
2. बैन्जामिन, आर. एंड एस. एलकिन (ई.डी), 1985, द डेमोक्रेटिक स्टेट (The Democratic State)] कनसास यूनिवर्सिटी प्रेस, कनसास।
3. बोज़, डेविड, 1997, लिबरटरेनिज्मः ए प्राइमर (Libertarianism: A Primer)] द फ्री प्रेस, न्यू यॉर्क।
4. कॉरनॉए, एम, 1984, द स्टेट एण्ड पॉलिटिकल थ्योरी (The State and Political Theory)] एन.जे. प्रिन्सटन य य